

॥ श्री हरि साई प्रसन्न ॥

श्री साई सच्यरित्र

(गुजराती)

अध्याय १

भंगणायरણ

श्री गणेशाय नमः । श्री सरस्वत्यै नमः । श्री गुरुभ्यो नमः ।
श्री कुलदेवतायै नमः । श्री सीतारामचंद्राभ्यां नमः ।
श्री सद्गुरुसाईनाथाय नमः ।

पवित्र प्राचीन आचार अनुसार सर्व देवताने प्रथम नमस्कार करुं छुं अने ग्रंथलेपन प्रारंभुं छुं.

- १) सङ्गता, सर्व विघ्नहर्ता, देवगणनायक श्री गणेशने प्रथम प्रणामुं छुं. श्री साई पोते ञ गणेशरूप छे.
- २) आ ग्रंथनी प्रेरणा देनार महादेवी सरस्वतीने नमस्कार करुं छुं. श्री साई सरस्वतीरूप बनी आ ग्रंथनुं गान स्वतः करे छे.
- ३) सर्बक-पालक-संहारक देवो ब्रह्मा-विष्णु-महेशने प्रणामुं छुं. श्री साईनाथ आ त्रणे देवरूप छे अने आ महान सद्गुरु ञ भक्तोने संसार-सागर तरावे छे.
- ४) मारा रक्षागलार कुणदेवता नारायण आदिनाथने हुं नमस्कार करुं छुं, जेमणे परशुराम रूपे सागर पासेथी कोकणनी भूमि संपादन करी अने कुणना आदि पुरुष तरीके प्रगट थया.
- ५) जे भारद्वाज गोत्रमां मारो जन्म थयो छे ते भारद्वाज मुनिने तथा महर्षिओ-याज्ञवल्क्य , भृगु, पराशर, नारद, वेदव्यास, सनक, सनंदन, सनत्कुमार, शुक, शौनक, विश्वामित्र, वसिष्ठ, वाल्मिकी, वामदेव,